संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

The LEXICON

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि

❑ केस स्टडी ❑ अवधारणा ❑ सिद्धांत ❑ मुद्दे ❑ शब्दावली

संघ एवं राज्य सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पेपर-IV के संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

☑ **टॉपर्स द्वारा पठित व अनुमोदित**

☑ **90 प्रतिशत से अधिक प्रश्नों के उत्तर समाहित**

नीचे दिए गए कूपन कोड का उपयोग कर **5 निःशुल्क ऑनलाइन टेस्ट** (प्रारंभिक और मुख्य परीक्षाओं हेतु) का लाभ उठाएं। इसके अलावा @chronicleindia.in से किसी भी पुस्तक/पत्रिका व सामग्री की खरीद पर **₹50/- की छूट** प्राप्त करें।

स्क्रैच कर कूपन कोड प्राप्त करें

संपादकः एन. एन. ओझा

(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)

लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

The
LEXICON
नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि

चतुर्थ संस्करण 2022
प्रथम संस्करण 2019, द्वितीय संस्करण 2020, तृतीय संस्करण 2021

बुक कोड: 376

मूल्य: 395/-

ISBN : 978-81-955729-0-8

प्रकाशक
क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.

कॉरपोरेट ऑफिस:
ए-27डी, सेक्टर-16, नोएडा-201301,
फोन नं: 0120-2514610-12,
E-mail : info@chronicleindia.in

संपर्क सूत्र:
संपादकीय : 9582948817, editor@chronicleindia.in
ऑनलाइन सेल सहयोग: 9582219047, onlinesale@chronicleindia.in
तकनीकी सहयोग : 9953007634, Email Id: it@chronicleindia.in
विज्ञापन : 9953007627, 9891601320, advt@chronicleindia.in
सदस्यता : 9953007629, 9953007628, Subscription@chronicleindia.in
प्रिंट संस्करण सेल : 9953007630, 9953007631, circulation@chronicleindia.in

सर्वाधिकार सुरक्षित © क्रॉनिकल पब्लिकेशंस प्रा. लि.: इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

पुस्तक में प्रकाशित सामग्री उपरोक्त विषय पर प्रकाशित पुस्तकों/जर्नल/रिपोर्ट/ऑनलाइन कंटेंट आदि से संकलित है। लेखक/संकलनकर्ता/प्रकाशक, प्रकाशित सामग्री की मूल लेखन का दावा नहीं करता। प्रकाशित सामग्री को पूर्णत: त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया गया है, फिर भी किसी भी प्रकार के त्रुटि के लिए क्षतिपूर्ति का दावा प्रकाशक/लेखक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। शंका की स्थिति में पाठक स्वयं भारत सरकार के दस्तावेज व अन्य स्त्रोतों के माध्यम से जांच कर सकते हैं। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।,
मुद्रक: चन्द्र प्रभु प्रिंटिंग वर्क्स, प्रा. लि., सी-40, सेक्टर 8, नोएडा (उ.प्र.) - 201301

पुस्तक के संबंध में

द लेक्सिकन 'नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि' का अद्यतन 2022 संस्करण संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सामान्य अध्ययन पेपर-IV के पाठ्यक्रम के अनुरूप तथा वर्तमान समय में प्रश्नों के बदलते स्वरूप को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

इस पुस्तक में 'नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि' से संबंधित अवधारणा, सिद्धांत, मुद्दे, शब्दावली एवं केस स्टडी इत्यादि आयामों को शामिल किया गया है।

सिविल सेवा परीक्षा का सामान्य अध्ययन पेपर-IV किसी भी परीक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण परीक्षण करता है। यह व्यक्ति के व्यक्तिगत नैतिक आचरण, शैक्षणिक व्यवहार, नैतिकता और उससे संबंधित सभी आदर्शवादी और व्यावहारिक दृष्टिकोण को विकसित करता है।

यह पुस्तक केवल परिभाषाओं, विचारों, उद्धरणों, अवधारणाओं का ही ज्ञान नहीं देता है बल्कि उन विचारों के अनुप्रयोग और अंतर्निहित मामलों आदि के विषय में सिविल सेवा उम्मीदवारों के नैतिक आचरण के विकास के लिए भी उपयोगी है।

संघ लोक सेवा आयोग पिछले दो वर्षों से सिविल सेवाओं के नैतिक मूल्यों पर प्रश्न पूछने के अलावा, शांति, दृढ़ता, अन्योन्याश्रयता जैसे मूल्यों के विषय से सम्बंधित प्रश्न पूछ रहा है, जिसका न केवल सार्वजनिक जीवन में बल्कि व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में भी प्रासंगिकता देखा जा सकता है। सार्वजनिक जीवन में नैतिक दुविधाएं, व्यक्तिगत जीवन में अंतरात्मा का संकट, गैर-शोधन का सिद्धांत, ज्ञान भ्रम, डिजिटलीकरण के कारण नकली (फेक) समाचार से सम्बंधित चुनौतियां आदि जैसे विभिन्न नैतिक मुद्दे से भी प्रश्न पूछे जा रहे हैं, जिसका नैकतिकता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।

पुस्तक के इस संस्करण में उपरोक्त सभी आयामों को शामिल करने के साथ ही, नैतिक दृष्टिकोण से संबंधित डिजिटल मिडिया और इसकी चुनौतियां; शरणार्थी संकट; राष्ट्रीय शिक्षा नीति; लैंगिक असमानता और डिजिटलीकरण इत्यादि जैसे कुछ समसामयिक मुद्दों को भी शामिल किया गया है। इसके अलावा, गांधी के शिक्षा के दृष्टिकोण और शिक्षा के प्रति समाज सुधारकों के योगदान का व्यापक रूप से उल्लेख किया गया है।

इस पुस्तक के माध्यम से आपको केस स्टडी के विभिन्न पहलुओं को समझने तथा प्रश्नों को हल करने की आदर्शवादी तथा व्यावहारिक दृष्टि प्राप्त होगी, जिससे आप सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन पेपर-IV तथा राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा व अभिरुचि से जुड़े प्रश्नों को हल कर सकते हैं।

–संपादक

पाठ्यक्रम

सामान्य अध्ययन-IV : नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

इस प्रश्न-पत्र में ऐसे प्रश्न शामिल होंगे जो सार्वजनिक जीवन में उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से संबंधित विषयों के प्रति उनकी अभिवृत्ति तथा उनके दृष्टिकोण तथा समाज से आचार-व्यवहार में विभिन्न मुद्दों तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर उनकी मनोवृत्ति का परीक्षण करेंगे। इन आयामों का निर्धारण करने के लिए प्रश्न-पत्रों में किसी मामले के अध्ययन (केस स्टडी) का माध्यम भी चुना जा सकता है। मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर किया जाएगा:

- नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध: मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक और परिणाम: नीतिशास्त्र के आयाम; निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र; मानवीय मूल्य-महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।
- अभिवृत्ति: सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति: विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारणा।
- सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य, सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना।
- भावनात्मक समझ: अवधारणाएं तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।
- भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।
- लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र: स्थिति तथा समस्याएं; सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं; नैतिक मार्गदर्शन के स्त्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियमन तथा अंतरात्मा; शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे; कार्पोरेट शासन व्यवस्था।
- शासन व्यवस्था में ईमानदारी: लोक सेवा की अवधारणा; शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भष्टाचार की चुनौतियां।
- उपर्युक्त विषयों पर मामला संबंधी अध्ययन (केस स्टडी)।

अनुक्रमणिका

01. लेक्सिकन ऑफ केस स्टडी 09–38

- केस स्टडी क्या है?
- केस स्टडी के प्रकार
- केस स्टडी पर संक्षिप्त विवरण
- केस स्टडी को हल करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण
- केस स्टडी में शामिल हितधारक
- केस स्टडी की व्याख्या
- विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न (संक्षिप्त विवरण)

02. नीतिशास्त्र और मानवीय सह–संबंध 39–98

- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक एवं परिणाम
- नीतिशास्त्र के आयाम
- निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र
- मानवीय मूल्य–महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा
- मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका
- परिवार व मूल्य विकास

03. अभिवृत्ति 99–144

- अभिवृत्ति सारांश, संरचना, वृत्तिः विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध
- नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि
- सामाजिक प्रभाव और धारणा
- लोक एवं प्रशासनिक अभिवृत्ति तथा भारत में अभिशासन

04. सिविल सेवा अभिरुचि और बुनियादी मूल्य 145–172

- सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर–तरफदारी
- अभिरुचि
- सिविल सेवाओं में निष्पक्षता तथा गैर–पक्षपात
- निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव

- कमजोर वर्गों के प्रति समानुभूति, सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना
- कानून का शासन

05. भावनात्मक समझ 173–208

- अवधारणा
- भावनात्मक समझ के अवयव
- भावनात्मक समझ का विकास
- सिविल सेवा में भावनात्मक समझ का उपयोग
- भावनात्मक समझ और कार्य अभिवृत्ति
- नेतृत्वकर्ता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की समझ

06. भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान 209–256

- आधुनिक नैतिक दर्शन
- मानकीय नीतिशास्त्र के सिद्धांत
- भ्रष्टाचार और नीतिशास्त्रीय सिद्धांत
- प्लेटो का सद्गुण सिद्धांत
- अरस्तू का सद्गुण सिद्धांत
- भारतीय नीतिशास्त्र की विशेषताएं: आस्तिक और नास्तिक
- गांधीवादी नीतिशास्त्र
- दंड एवं इसका नैतिक औचित्य

07. लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र 257–322

- स्थिति तथा समस्याएं
- सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएं तथा दुविधाएं
- नैतिक मार्गदर्शक के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियमन तथा अंतरात्मा
- शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण
- कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था

08. अंतरराष्ट्रीय संबंध और नैतिकता 323–346

- अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता
- अंतरराष्ट्रीय नीतिशास्त्र में सॉफ्ट पावर
- सामाजिक पूंजी और अंतरराष्ट्रीय संबंध

- अंतरराष्ट्रीय मामलों के अंतर्गत नैतिक मुद्दे
- युद्ध की नैतिकता के विरुद्ध तर्क

09. शासन व्यवस्था में ईमानदारी 347–436

- लोक सेवा की अवधारणा
- शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार
- सरकार में सूचना का आदान-प्रदान, सूचना का अधिकार और पारदर्शिता
- नीतिपरक आचार संहिता व आचरण संहिता
- नागरिक घोषणा पत्र
- कार्य संस्कृति
- नागरिकों को सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता
- सार्वजनिक निधि का उपयोग
- भ्रष्टाचार की चुनौतियां

10. प्रशासन में हितों का संघर्ष/टकराव 437–466

- सरकार में हितों का टकराव
- प्रशासन में संघर्ष
- सेवा की भावना
- अतिव्यापी/परस्पर व्याप्त और अंतरनुभागीय जिम्मेदारियों में हितों का संघर्ष
- हितों का टकराव और भ्रष्टाचार
- हितों के संघर्ष का समाधान

11. व्यावसायिक नीतिशास्त्र 467–478

- व्यावसायिक आचार संहिता एवं नीतिशास्त्रीय संहिता
- कर्मचारी आचार संहिता का महत्व

12. उद्धरण और कथन 479–491

- भारतीय
- पश्चिमी
- वैश्विक
- मूल्यों पर कथन
- नैतिकता पर कथन
- शक्ति पर दार्शनिक विचार
- भ्रष्टाचार पर कथन

13. नैतिक मुद्दे 492–555

- समाज और सामाजिक मुद्दे
  - लिंचिंग और असहिष्णु समाज
  - कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न
  - लैंगिक असमानता
  - गर्भपात से संबंधित नैतिक मुद्दे
  - अजन्मे बच्चे का अधिकार
  - आत्महत्या
  - शिक्षा और नैतिक मुद्दे
  - शरणार्थी संकट
- विज्ञान प्रौद्योगिकी
  - जीनोम एडिटिंग
  - थ्री-पेरेंट बेबी
  - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित नैतिक मुद्दे
  - डेटा गोपनीयता और संरक्षण
- लोक प्रशासन और शासन
  - प्रशासनिक विवेकाधिकार
  - प्रशासन में भ्रष्टाचार
  - भ्रष्टाचार से संबंधित नैतिक मुद्दे
  - व्हिसल ब्लोइंग
  - भाई-भतीजावाद
  - मानव संसाधन से संबंधित नैतिक मुद्दे
- पर्यावरण
  - इंटर-जेनरेशनल इक्विटी
  - जलवायु शरणार्थी
  - मानव-पशु संघर्ष और नाशक प्रजातियों को मारने से संबंधित मुद्दे
  - पर्यावरण बनाम विकास
- अर्थव्यवस्था
  - पूंजी अधिकतमीकरण तथा पूंजी का समान वितरण कृषक संकट संबंधी नैतिक मुद्दे
  - नैतिकता एवं कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी
  - नैतिकता और कॉर्पोरेट प्रशासन
- अंतरराष्ट्रीय
  - विकासात्मक सहायता और सशर्तता संबंधी नैतिकता मानवीय हस्तक्षेप
  - विश्व व्यापार संगठन के अंतरराष्ट्रीय व्यापार और अल्प विकसित देश के हित संबंधी नियम
  - मुद्रा का हेरफेर
- सुरक्षा
  - आतंकवादियों का मानवाधिकार
  - विदेशी जल-सीमा में मछुआरों का भटकाव एवं उनकी गिरफ्तारी
- आपदा प्रबंधन

14. नीतिशास्त्र संबंधित शब्दावली 556–576

1

लेक्सिकन ऑफ केस स्टडी

- केस स्टडी क्या है?
- केस स्टडी के प्रकार
- केस स्टडी पर संक्षिप्त विवरण
- केस स्टडी को हल करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण
- केस स्टडी में शामिल हितधारक
- केस स्टडी की व्याख्या
- विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न (संक्षिप्त विवरण)

आज सिविल सेवा राजनीतिक हस्तक्षेप, कमजोर आधार तथा उचित कार्य वातावरण के अभाव के रूप में कई चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे में सैद्धान्तिक अध्ययन की अपनी सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं। अत: संघ लोक सेवा आयोग द्वारा यह निर्णय लिया गया कि बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में सिविल सेवा परीक्षा में उन पद्धतियों को शामिल किया जाए, जो अन्तरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो तथा जिनसे नौकरशाही का ऐसा वर्ग तैयार हो, जो केवल किताबी ज्ञान में महारत न रखता हो, अर्थात् नौकरशाही से रोज वास्ता पड़ने वाले विषयों का भी व्यवहारिक ज्ञान हो। यह पुस्तक भी सिविल सेवा परीक्षा में आए बदलाव को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिनमें कई ऐसे 'Terms' हैं, जिन्हें समझने में पाठकों को कठिनाई हो सकती है। केस स्टडी मॉडल एक ऐसा माध्यम है, जिसके सहारे उन 'Terms' को सरलीकृत किया जा सकता है, ताकि उन्हें प्रासंगिक संदर्भ से जोड़कर बृहद परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

नीचे दिए गये अनुभाग में हमने उद्देश्यपूर्ण तरीके से यह प्रस्तुत किया है कि केस स्टडी के प्रश्नों को कैसे हल किया जाता है। केस स्टडी, किसी मामले के बेहतर प्रबंधन से संबंधित शिक्षाशास्त्र कहा जाता है। इसके आलावा कुछ लेख भी दिए गये हैं, जो केस स्टडी के प्रश्नों को सही समझ विकसित करने एवं बेतरीन तरीकों से सुलझाने में मदद करेंगे।

केस स्टडी क्या है?

एक केस स्टडी कोई गतिविधि, घटना या समस्या है, जिसमें वास्तविक या काल्पनिक स्थितियां शामिल होती हैं और इसमें वे जटिलताएं भी सम्मिलित होती हैं जिनका व्यक्ति कार्यस्थल पर सामना करता है। केस स्टडी का विषय, वास्तविक जीवन की जटिलताएं और किसी व्यक्ति या अधिकारी के निर्णय पर इनका प्रभाव होता है। केस स्टडी का विश्लेषण करने के लिए आपको अपने ज्ञान और सोच कौशलों को वास्तविक जीवन की स्थितियों पर लागू करने की आवश्यकता होती है। केस स्टडी विश्लेषण से सीखने के लिए आप 'विश्लेषण, ज्ञान और तर्क को लागू करेंगे और निष्कर्ष निकालेंगे।' (कार्डोस और स्मिथ 1979)

कार्डोस और स्मिथ के अनुसार एक अच्छी केस स्टडी में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं:

- इसे वास्तविक जीवन से लिया जाता है (सच्ची पहचान को छिपाया जा सकता है)।
- इसमें कई भाग होते हैं और प्रत्येक भाग आमतौर पर समस्या और चर्चा के बिन्दुओं पर समाप्त होता है। केस में स्थिति (situation) की कोई स्पष्ट निर्दिष्ट सीमा नहीं हो सकती है।
- इसमें पाठक के लिए समस्याओं और मुद्दों के समाधान हेतु पर्याप्त सूचना होती है।
- यह पाठक के विश्वासयोग्य होती है (केस में समायोजन (Setting), व्यक्तित्व, घटनाओं का क्रम, समस्याएं और संघर्ष शामिल होते हैं)

संक्षेप में, एक केस स्टडी आपको निष्क्रिय रहने के स्थान पर भाग लेने का मौका देती है। किसी मामले पर परीक्षार्थियों के दृष्टिकोण को बेहतर तरीके से जानने का एक साधन उपलब्ध करता है। इसके माध्यम से परीक्षक प्रश्नोत्तर शैली की परीक्षा से परे उम्मीदवार के भीतर क्षमता की मौजूदगी या गैरमौजूदगी की संभावना का परीक्षण कर सकता है।

केस स्टडी के प्रकार

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम का सामान्य अध्ययन पेपर-4 की विषय वास्तु नीतिशास्त्र (एथिक्स) है। पेपर 4 का एक सेक्शन केस स्टडी से सम्बंधित होता है, जहां से 100 से अधिक अंको के प्रश्न पूछे जाते हैं। केस स्टडी उम्मीदवारों के लिए प्रमुख स्कोरिंग क्षेत्रों में से एक है और इसलिए केस स्टडी की समझ तैयारी का बहुत महत्वपूर्ण पहलू है। केस स्टडी के मामलों को हल करने के लिए उम्मीदवार का दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण होता है। यूपीएससी द्वारा पूछे गए केस स्टडी पर प्रश्न इस मामले में अलग हैं कि, वे उन विशेषताओं की जांच करते हैं, जो एक सिविल सेवक से अपेक्षित हैं।

2

नीतिशास्त्र और मानवीय सह-संबंध

- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक एवं परिणाम
- नीतिशास्त्र के आयाम
- निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र
- मानवीय मूल्य-महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा
- मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका

मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक एवं परिणाम

अवधारणा

Ethics अंग्रेजी का शब्द है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Ethica' से हुई है। 'Ethica' का अर्थ है- रीति, प्रचलन या आदत। नीतिशास्त्र रीति, प्रचलन या आदत का व्यवस्थित अध्ययन है।

प्रचलन, रीति या आदत मनुष्य के वे कर्म है, जिनका उसे अभ्यास हो जाता है। दूसरे शब्दों में, ये मनुष्य के अभ्यासजन्य आचरण है। मनुष्य की ऐच्छिक क्रियाएं आचरण कहलाती है; अर्थात् आचरण वे कर्म है, जिन्हें किसी उद्देश्य या इच्छा से किया जाता है। नीतिशास्त्र इन्हीं ऐच्छिक क्रियाओं या आचरण का समग्र अध्ययन है। इसकी विषयवस्तु आचरण है। अत: इसे आचारशास्त्र भी कहा जाता है।

आचरण का अध्ययन दो तरीके से किया जा सकता है-प्रथम, मनुष्य का आचरण कैसा होता है; द्वितीय, मनुष्य का आचरण कैसा होना चाहिए?

मनुष्य का आचरण कैसा होना चाहिए, इसके अध्ययन के लिए हमें एक शास्त्र की आवश्यकता होती है। वे कर्म, जिन्हें हम अच्छा या बुरा मानते आए हैं, वास्तव में उसकी कसौटी क्या है और वे कहां तक ठीक हैं? वह शास्त्र जिनमें इन पर विचार किया जाता है, नीतिशास्त्र कहलाता है। दूसरे शब्दों में, नीतिशास्त्र का प्रमुख कार्य है, मनुष्य के ऐच्छिक कार्यों की परीक्षा करके उन्हें नैतिक-अनैतिक या उचित-अनुचित की संज्ञा देना।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अत: यह अनिवार्य है कि उसके चरित्र एवं संकल्प नैतिक मानदंडों के अनुकूल हों, ताकि उसे जीवन के परम लक्ष्य-सत् तथा शुभ की प्राप्ति हो सके। नीतिशास्त्र इसी परम लक्ष्य अर्थात् सर्वोच्च आदर्श का अध्ययन करता है।

वस्तुत: नीतिशास्त्र मानक नियमों एवं आदर्शों द्वारा मानवीय आचरण तथा व्यवहार का नियमन, मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन करने वाली एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज का अधिकतम कल्याण है। व्यक्ति का आचरण उसके चरित्र पर निर्भर करता है। चरित्र के अनुकूल ही व्यक्ति का आचरण होता है। चरित्र मनुष्य के संकल्प करने का अभ्यास है। चूंकि नीतिशास्त्र शुभ आचरण का अध्ययन करता है, अत: इसे चरित्र विज्ञान की भी संज्ञा दी जाती है।

नीतिशास्त्र की परिभाषा

यह मानवीय प्रयासों में सही और गलत का अध्ययन करता है। अधिक सैद्धांतिक स्तर पर देखें तो यह वह पद्धति है, जिसके द्वारा हम अपने मूल्यों को वर्गीकृत करते हैं और उसका अनुपालन करते हैं। निस्संदेह यह एक तथ्य है कि मनुष्य में सही व गलत व्यवहार में फर्क करने की एक त्वरित जागरूकता होती है।

नैतिक दर्शनशास्त्र केवल उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण नहीं करता, बल्कि यह उन तथ्यों की तात्पर्यता प्रदर्शित करने का प्रयास करता है, उसे बौद्धिक स्तर पर स्वीकार या खारिज करता है, उसके प्रभावों को समझता है, उसके व्यावहारिक परिणामों को देखता है और सबसे प्रमुख यह कि वह उसके अंतिम उद्देश्यों तक पहुंचता है। इस प्रकार नीतिशास्त्र को इस रूप में परिभाषित किया जा सकता है कि चरम प्रसन्नता प्राप्ति के साधन के रूप में औचित्य या अनौचित्य के दृष्टिकोण से मानवीय क्रियाकलापों का अध्ययन ही, नीतिशास्त्र है (The systematic study of human actions from the point of view of their rightfulness or wrongness as means for the attainment of the Ultimate happiness)। इस प्रकार नीतिशास्त्र मानवीय व्यवहार के उस भाग की अच्छाई या बुराई का चिंतनशील अध्ययन है, जिसकी कुछ व्यक्तिगत जवाबदेही है।

3

अभिवृत्ति (ATTITUDE)

- अभिवृत्ति सारांश, संरचना, वृत्ति, विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध
- नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि
- सामाजिक प्रभाव और धारणा

अभिवृत्ति सारांश, विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध

अवधारणा

फिशबीन एवं अजेन के मुताबिक ''अभिवृत्ति किसी दी हुई वस्तु के संदर्भ में निरंतर अनुकूल या प्रतिकूल भाव से प्रत्युत्तर की विज्ञ-पूर्ववृत्ति है'' (A learned predisposition to respond in a consistently favourable or unfavourable manner with respect to a given object.)। कुछ ऐसी ही परिभाषा **इगली और चायकेन** (1993) ने भी प्रस्तुत की। उनके मुताबिक ''अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जो किसी इकाई विशेष की कुछ हद तक पक्ष या विपक्ष से मूल्यांकन द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।'' (Attitude is a psychological tendency that is expressed by evaluating a particular entity with some degree of favour or disfavor)। इस परिभाषा के हिसाब से अभिवृत्ति सभी वस्तुओं अथवा परिस्थितियों के बजाय इकाई अथवा वस्तु विशेष पर केंद्रित है।

हिंदी में अभिवृत्ति की जगह 'मनोवृत्ति' एक प्रचलित शब्द है, जिसका व्यवहार प्रायः हम अपने दैनिक जीवन में दिन-प्रतिदिन करते हैं। वस्तुतः मनोवृत्ति किसी व्यक्ति की मानसिक तस्वीर या प्रतिच्छाया है; जिसके आधार पर वह व्यक्ति, समूह, वस्तु, परिस्थिति या फिर किसी घटना के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल दृष्टिकोण अथवा विचार को प्रकट करता है। मनोवृत्ति का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर दिशासूचक रूप से पड़ता है। मनोवृत्ति व्यक्ति की शक्ति को एक खास दिशा में लगा देती है, जिसके कारण वह अन्य दिशाओं को छोड़कर एक निश्चित दिशा में व्यवहार करने लगता है।

जैसा कि इसकी परिभाषा से स्पष्ट है- मनोवृत्ति सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। अगर व्यक्ति की मनोवृत्ति सकारात्मक है तो उसकी प्रतिक्रिया भी अनुकूल होगी, परन्तु अगर मनोवृत्ति नकारात्मक है तो प्रतिक्रिया अनुकूल नहीं, बल्कि प्रतिकूल होगी; अर्थात् व्यक्ति की मनोवृत्ति तथा उसके व्यवहार के बीच सदा सम्बद्धता होती है।

सामाजिक मनोविज्ञानी, जो अभिवृत्ति का अध्ययन करते हैं, वे ऐसी समीक्षाओं को शामिल करने वाले कारकों का अन्वेषण करते हैं; वे कैसे निर्मित होते हैं, कैसे बदलते हैं आदि। 'वस्तु' (object) में लोग, चीज, घटनाएं अथवा मुद्दे शामिल हैं। जब आप पसंद, नापसंद, प्यार, घृणा, अच्छा, बुरा इत्यादि शब्दों का प्रयोग कर रहे होते हैं, तब आप अपनी अभिवृत्ति का वर्णन कर रहे होते हैं। इस दृष्टिकोण से अभिवृत्ति किसी व्यक्ति विशेष, समूह, कार्य अथवा विषय-वस्तु का मूल्यांकन है।

अभिवृत्ति एवं अन्य धारणाएं

अभिवृत्ति को दो अन्य घनिष्ठ रूप से संबंधित संप्रत्ययों, विश्वास (beliefs) एवं मूल्य (values) से विभेदित किया जाना चाहिए। विश्वास, अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक (Cognitive) घटक को इंगित करते हैं तथा एक ऐसे आधार का निर्माण करते हैं, जिन पर अभिवृत्ति टिकी है; जैसे ईश्वर में विश्वास या राजनीतिक विचारधारा के रूप में प्रजातंत्र में विश्वास।

मूल्य, ऐसी अभिवृत्ति या विश्वास है, जिसमें 'चाहिए' का पक्ष निहित रहता है; जैसे आचारपरक या नैतिक मूल्य। एक व्यक्ति को मेहनत करनी चाहिए, या एक व्यक्ति को हमेशा ईमानदार रहना चाहिए, क्योंकि ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, ऐसे विचार मूल्य के उदाहरण हैं।

मूल्य का निर्माण तब होता है, जब कोई विशिष्ट विश्वास या अभिवृत्ति व्यक्ति के जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग बन जाती है। इसके परिणामस्वरूप मूल्य में परिवर्तन

5

भावनात्मक समझ

- अवधारणा
- भावनात्मक समझ के अवयव
- भावनात्मक समझ का विकास
- सिविल सेवा में भावनात्मक समझ का उपयोग
- भावनात्मक समझ और कार्य अभिवृत्ति
- नेतृत्वकर्ता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की समझ

भावनात्मक समझ

विकासमान जीव विज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान के प्रमाण यह बताते हैं कि वास्तव में भावनाएं कहीं अधिक कुशाग्र होती हैं और समूह बुद्धि तथा सामाजिक पूंजी के निर्माण में भावनात्मक समझ या बुद्धि (EI- Emotional Intelligence), बुद्धिलब्धि (IQ-Intelligence Quotient) की तुलना में अधिक प्रभावी होती है। बैठकों एवं अन्य सामूहिक गतिविधियों में, जब लोग एक-दूसरे से सहयोग कि लिए आते हैं, उनमें सामूहिक आईक्यू, उपस्थित लोगों के बौद्धिक ज्ञान एवं कौशल का कुल जोड़, प्रबल होता है। पर वास्तव में सामूहिक बुद्धि का सबसे महत्वपूर्ण जो तत्व होता है, वह औसत या सर्वोच्च आईक्यू नहीं होता, वरन् भावनात्मक बुद्धि या समझ होता है। उस समूह में मौजूद निम्न भावनात्मक बुद्धि वाला एकमात्र व्यक्ति संपूर्ण समूह के सामूहिक आईक्यू को कमजोर कर सकता है। एक उदाहरण के द्वारा इसे समझा जा सकता है:

''मान लीजिए कि एक भयंकर प्राकृतिक आपदा घटित हो गई है। राहत एवं पुनर्वास के लिए केन्द्र एवं राज्य तथा विभिन्न विभागों के मध्य बेहतर समन्वयन की जरूरत है। संक्षेप में यह कि निर्णय लोगों द्वारा लिया जाना है। कल्पना कीजिए कि सारे अधिकारी भविष्य की रणनीति पर बैठक में विचार कर रहे हैं। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि समूह में शामिल सभी लोगों का संयुक्त बुद्धि व कौशल, सामूहिक आईक्यू है। तभी किसी विभाग के प्रधान की क्रोध की भावना (निम्न भावनात्मक बुद्धि) उबल पड़ती है और गरमा-गरम बहस शुरू हो जाती है। इससे पूरी बैठक की दिशा बदल जाती है और चर्चा अपनी दिशा खो देता है। यहां एक व्यक्ति की निम्न भावनात्मक बुद्धि ने उच्च सामूहिक बुद्धि यानी ग्रुप आईक्यू पर प्रभावी होते हुए विमर्श को बिगाड़ दिया।

आईक्यू, अकेला हमारे सामूहिक बुद्धि का निर्माण नहीं कर सकता। आईक्यू में कोई हृदय स्पंदन नहीं होता। भावनात्मक बुद्धि या समझ, दूसरी ओर, लेजर बीम की तरह फोकस करती है कि हमारे लिए महत्वपूर्ण क्या है? भावनाओं द्वारा संचारित संकेतों के बिना जीवन नीरस, रंगहीन और अर्थहीन होगा। मेरे और आपके साथ क्या होता है, इसकी देखभाल की अपेक्षा हम मशीन से अधिक नहीं कर सकते (भावनात्मक समझ के अभाव में)।

भावनाओं के बौद्धिक निर्देशन के बिना मनुष्य नम्य होकर परिस्थिति का प्रत्युत्तर नहीं दे सकता है। सही समय एवं सही जगह का फायदा नहीं उठा सकता, अस्पष्ट एवं विरोधाभासी संदेशों की भावना को नहीं समझ सकता। परिस्थिति के अलग-अलग तत्वों की महत्ता को नहीं पहचान सकता, परिस्थितियों के बीच की समानताओं का पता नहीं लगा सकता। पुरानी अवधारणाओं एवं नयी अवधारणा का एकीकरण कर नया मार्ग नहीं बन सकता या फिर कोई अनूठा मार्ग विकसित नहीं कर सकता। भावनाओं के मार्गदर्शन के बिना हम विवेकी नहीं हो सकते।

भावनात्मक समझ गहन श्रवण के द्वारा पंजीकृत किया जाता है- खुद को सुनना एवं अन्य को भी सुनना (क्रैमर)। उच्च भावनात्मक समझ वाले लोग खुद की भावनाओं को सुनना अच्छी तरह जानते हैं और उसके प्रसार को भी नियंत्रित करना जानते हैं, इसलिए वे उनके द्वारा अपहृत नहीं होते। भावनात्मक समझ वाले लोग ध्वंसात्मक भावनाओं पर निगरानी रखना जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि उनकी भावनायें दूसरों पर कैसे प्रभाव डालती हैं। भावनात्मक समझे वाले व्यक्ति:

- खुद पर हंस सकते हैं।
- अपने सबल पक्षों का कहां इस्तेमाल करें और अपनी कमजोरी की क्षतिपूर्ति कैसे करें, के बारे में जानते हैं।
- दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखते हैं और उनके साथ सहानुभूति रखते हैं।